Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2019 = 6.380, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, JAN-FEB, 2021, VOL- 8/63

जया जादवानी के काव्य में सामाजिक चेतना

रमेश एस. जगताप, Ph. D.

असोसिएट प्रोफेसर, शोध मार्गदर्शक एवं विभागाध्यक्ष जी. व्ही. एस कला महाविद्यालय बामखेडा .त. त. ता. शहादा जि. नन्दूरबार ४२५४२३ महाराष्ट्र *rameshjagtap296@gmail.com*

Paper Received On: 20 FEB 2021
Peer Reviewed On: 27 FEB 2021
Published On: 1 MAR 2021

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

नारी मुक्ति आंदोलन दशकों से चलाया जा रहा है । आज हम अपने आपको बडे आधुनिक प्रगत तथा विज्ञान तथा प्राद्योगीकी के क्षेत्र में विकसित मान रहे है । दुनिया के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलने की बात कर रहे है । हमारी शक्ति का लोहा अमेरिका, चायना और रुस भी मानने लगे है । स्पष्ट है कि हम उन्नति और प्रगति की राहपर चल रहे है । किन्तु क्या हम सामाजिक क्षेत्र की विषमता,आर्थिक शोषण, भेदा भेद, जातीय संघर्ष, संप्रदायवाद, लिंग भेद आदि की समस्याओं को कम कर सके है । इसका जवाब हमें नहीं मे मिलता है । क्योंकि हम देखते है कि नारी आज कितनी भी उन्नत हो गई हो उसका शोषण लगातार भिन्न भिन्न तरिके से हो रहा है । इसका चित्र हम रोज मीडिया, समाचारपत्र द्वारा देख और सुन रहें है । यह चित्र अगर हमें बदलना है तो हमारी सोच बदलनी होगी । नारी की हिस्सेदारी बढानी होगी, उसे अपने घर से इज्जत देनी होगी । नारी अत्याचार की घटना को होते देख उसे रोकना होगा । 'हमें क्या करना है। इस मानसिकता को बदलने की आवश्यकता है । नारी को एक संपूर्ण व्यक्ति के रुप में हम जब तक उसे स्वीकार नही करते तब यह चित्र नही बदल सकता । भारतीय साहित्य भी इसकी पूर जोर कोशिश में लगा है कि नारी शोषण पर लगाम लगनी चाहिए । अत: हम सब मिलकर ही इसे बदल सकते है ।

वैसे यह भी कहा जाता है कि घायल की गति घायल ही जानता है । दशकों से साहित्यकारों, महर्षियों ने नारी मुक्ति की बात चलाई है । पर यह कार्य संभव नहीं हो सका है । अब नारी भी इसमें आ चुकी है । वह सारे अधिकार मांगना चाहती है जो उससे छीन लिये गए है । इन्ही अधिकारों को पाने के लिए हिन्दी की कई लेखिकाए अपनी लेखनी से लगातार कोशिश कर रही है जिसमें जया जादवानी एक प्रमुख हस्ताक्षर के रुप में उभरी है । जया जादवानी जीने नारी पर होनेवाले विभिन्न प्रहारों की नींदा की है । और नारी अपने कर्तव्यों को पार करती हुयी कितना कुछ सहती है । इसका चित्रण इन्होंने अपनी कविताओं में किया है ।

समाज नारी के कई रूपों को मानता है । किन्तु उसमें से भोग वृत्ति को हमेशा बढ़ावा देता है । इस संदर्भ में डॉ. उषा झा लिखती है – ''पुरुष को पुरुष होना उसके जीवन की सार्थकता है किन्तु स्त्री जाति के संदर्भ में आज भी

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

एक संपूर्ण व सापेक्ष व्यक्तित्व के रुप में देखी जाती है । उसके साथ कई शर्ते भी जुडी है । कभी वह महान शक्ति की संज्ञा से विभूषित है, तो कभी पशुवत, स्त्री व्यक्तित्व के रुप में , दीन अबला के रुप में , समाज के भेडियों के पंजे से नुची शिकार मात्र हें कभी वात्सल्य व मातृत्व की मूर्ति '' निष्कर्ष रुपसे कह सकते है कि नारी आज भी किसी न किसी रूप में छली और प्रताडित की जाती है।

जया जादवानी जी ने नारी सम्मान के साथ – साथ उनमें चेतना जगाने की कोशिश की है । जया जी ने अब तक थोडा लिखा लेकिन ठोस लिखा । उनका 'तत्वमसि' उपन्यास को बड़ी मान्यता मिली । कुछ न कुछ छूट जाता है तथा मिठो पानी', 'खारो पानी' उनके अन्य उपन्यास है । कहानी संग्रहों में अन्दर के पानियों में एक सपना कांपता है । मुझे ही होना हें बार–बार, उससे पूछो, मै अपनी मिट्टी में खडी हूँ काँधे पर अपना हल लिए ।

जया जीने अब तक तीन काव्य संग्रह लिखे है – मैं शब्द हूँ, अनन्त भावनाओं के बाद भी, उठाता है कोई एक मुठ्ठी ऐश्वर्य । जया जादवानी जी नारी की सामाजिक स्थिति के बारे में अपनी एक कविता में लिखती है । क्योंकि मैं हर जगह पाई गई । नारी हर स्थान पर पायी जाती है । उसके अनेक रुप होते है । वह कई भूमिकाओं में दिखाई देती है। लेकिन उसे वह सम्मान नहीं मिलता जो उसे मिलना चाहिए । जैसे कोई गमले में पौधा उगा लेता है । जयाजी लिखती है

मैं हर जगह पाई गई
हर जगह उगा ली गई
गुलदानों में , बैठकों में
नालियों के मुहानों में
कीचड के ढेर में

आधुनिक जीवन में नारी एक शोभा की वस्तु बनकर रह गई है। मनुष्य नारी का इस्तेमाल करके, उसकी सीढियाँ बनाकर बुलदी पर पहुँचना चाहता है । इस बारे में जादवानी जी लिखती है –

सोने के कमरों मे
बेतरतीब लपेटे में ले बिस्तरों में
सलवटों में
बाहरी हो कि भीतरी
सिगरेट के धुएँ में
शराब की बोतलों में
फाइव स्टार होटल के कमरों में
कपडे उतारते हुए कपडे पहनते हुए
उनके टपकते वीर्य को लोकने
क्योंकि मैं हर जगह पाई गई ।

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

स्पष्ट है कि नारी के प्रति आज भी वहीं सोच है जो राजा महाराजाओं के जमाने में हुआ करती थी । केवल शोषण के तरिके बदले है । पहले वह हवेलियों में पाई जाती थी अब फाइवस्टार होटलों में दिखाई देती है । इसका मतलब नारी शोषण अत्याचारों के रुप बदले है । लेकिन पुरुष नहीं बदला है जैसे – नारी अपना अस्तित्व शतकों से तलाश रही है। लेकिन अभीतक उसे वह मंजिल नही मिल पाई है –

वे हर बार छोड आती हैं
अपना चेहरा
उनके बिस्तर पर
सारा दिन बिताती हैं
जिसे ढूँढने में
रात खो आती हैं।

नारी हमेशा अपना अक्स पुरुष में ढूँढती है । लेकिन पुरुष केवल उसे भोग्यवस्तु मानता है । यह सर्वस्व अर्पित करती है । लेकिन जब उसे घर से बेघर कर दिया जाता है । तो उसके पास केवल तनपर कपडे होते है । स्पष्ट है कि बर्फ से पानी बनने का जितना समय होता है उतने ही समय में नारी को पुरुष अपने जीवन से बेदखल कर देता है।

इतना ही था वह
जितना बर्फ में ताप
और मैंने
उम्र सारी गुजार दी
बर्फ लपेटे हुए।

नारी को समाज में अपना अस्तित्व और अपनी इज्जत बनाने । बचाने में कडा संघर्ष करना पड़ता है । क्योंकि नारी को समाज की बनी परपराएँ, बंदिशों का मोहताज होना पड़ता है । वह स्वंय के जीवन के फैसले नही ले सकती है ।

पढते हैं खुद
खुद नतीजे निकालते हैं
मेरी दीवारों पर क्या कुछ
लिख गए लोग

नारी से ही सृष्टि का निर्माण संभव हुआ है । नारी के बिना संसार अधुरा है । सृष्टि की किताब का आरंभ नारी से ही हुआ है । लेकिन फिर भी उस किताब के पन्नों पर हमने कालिख लगा दी है । मरियम, माँ सीता को हमने कलंकित कर दिया है । जयाजी इस बारे में लिखती है –

जैसे हाशिए पर लिख देते हैं
बहुत फालतू शब्द और
कभी नही पढते उन्हें

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

ऐसे ही वह लिखी गई और

पढी नहीं गई कभी

जबकि उसी से शुरु हुई थी

पुरी एक किताब

नारी कितनी भी शिक्षित हो जाए उसे पुरुष रुपी नौंका से संसार को पार करना होता है और इस संसार रुपी भवसागर में कई बार हिलोरें आते है । सबकुछ नष्ट होते दिखाई देता है । मंजिल अंधकारमय नजर आती है । फिर किसी न किसी का सहारा लेकर जीवन को चलाना पड़ता है । नारी जीवन अनेकों रहस्यों से भरा होता है।

जैसे – तहखानों में तहखाने

सुरंगों में सुरंगें

ये देह भी अजब ताबूत है

ढूंढ लेती हूँ जब ऊपर आने के रास्ते

ये फिर वापस खींच लेती है ।

इससे प्रतीत होता है कि नारी की त्रासदी कभी खत्म नहीं होती । उसका पूरा जीवनचक्र दूसरे पर आश्रित होता है । जिस प्रकार बाग में फूल खिलते है । लेकिन उसका अंत बडा ही दुखभरा होता है । कुछ फूल मंदिरों की पूजा में जाते है तो कुछ कोठियों में नवाबों , अमीरों के हाथों में शृंगार करते है । नारी अपना पूरा जीवन जलकर दूसरों को उजाला देती है जैसे में इस सबसे आहिस्ते आहिस्ते गुजर गई जिसके बीच में मुझे रोपित कर दिया गया था।

उसी शाख पर खिली में जिस पर प्रकृति ने उगाया था ।

और फूल पक कर तोड़ ली गई ।

वे सारे मौसम मुझ पर से गुजर गए

शाख मेरा बोझ संभाले खडी रही चुपचाप

हम सबका अस्तित्व एक और अस्तित्व को पोषित करने में है

कही यही बात नदी ने चुपके से कानों में मेरे

सागर में विलीन होने से पहले।

निष्कर्ष रुपसे कह सकते हैं कि जया जादानी जी नारी समस्याओं को, उनकी पीडा

को बखुबी जानती और समझती है।

इनकी कविताओं में आधुनिक जीवन में भी नारी के प्रति पुरुषी मानसिकता दृष्टिगोचर होती है, तथा नारी के अन्त:संघर्ष की यात्राए उनकी कविता कराती है । नारी के कोमल स्पंदन अपनी अनुभूतियों से बुनती दिखाई देती है । और नारी जीवन का रागात्मकता (प्रेम) का उत्सव भी मनाती दिखाई देती है। स्पष्ट है कि जया जादवानी जी आधुनिक सोच की आधुनिक कवियित्री है।

संदर्भ सूची:

डॉ. उषा झा हिन्दी कहानी और स्त्री विमर्श

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies